शेख़ फ़रीद – सबद १३४
काइ पटोला पाड़ती क्मबलड़ी पहिरेइ ॥
सलोक, गुरु अमरदास, गुरु ग्रंथ साहिब, १३८३

काइ पटोला पाड़ती क्मबलड़ी पहिरेइ ॥
नानक घर ही बैठिआ सहु मिलै जे नीअति रासि करेइ ॥१०४॥

सार: जीवन के अति चरम रूप, चाहे वैभव हो या तपस्या, प्रतिष्ठा हो या सादगी, सुख हो या त्याग, स्वयं में वास्तविक जागरण का मार्ग नहीं हैं। वैभवपूर्ण जीवन अक्सर भीतरी गहरी शून्यता को छिपा सकता है जबकि साधारण जीवन के पीछे बढ़ा-चढ़ा अहंकार भी छिपा हो सकता है। आत्मज्ञान बाहरी परिस्थितियों से प्राप्त नहीं होता, जैसे कि धन-दौलत, गरीबी, सामाजिक या धार्मिक मेल-जोल, या किसी विशेष प्रकार के वस्त्र धारण करना। यह तब प्रकट होता है जब हमारे इरादे शुद्ध, सच्चे और हमारी अंतरात्मा के साथ पूर्णतः मेल खाते हों। सच्ची समृद्धि, उस चेतना की गहराई में निहित है जिसे हम भीतर से विकसित करते हैं।

काइ पटोला पाड़ती क्मबलड़ी पहिरेइ ॥
तुम अपने बढ़िया रेशमी वस्त्रों को क्यों फाड़ते हो और उसकी जगह खुरदुरा, पैबंद लगा कंबल क्यों ओढ़ते हो। इसका अर्थ है कि भौतिक धन-संपत्ति जमा करना या अपनी चीज़ों का त्याग करना तब तक कोई मायने नहीं रखता जब तक इरादों में ईमानदारी न हो।

नानक घर ही बैठिआ सहु मिलै जे नीअति रासि करेइ ॥१०४॥
नानक कहते हैं कि वह सर्वव्यापी प्रियतम हमारे भीतर ही निवास करता है और यदि हमारे इरादे सच्चे हों तब हम उसे अनुभव कर सकते हैं। इस सर्वव्यापी उपस्थिति का अनुभव हम अपने दैनिक जीवन में भी कर सकते हैं, जब हमारा मन सत्यनिष्ठ हो, अहंकार शांत हो और इरादे पूरी तरह सच्चे हों। (१०४)

तत्त्व: गुरु अमरदास, शेख़ फ़रीद के संदेश को उजागर करते हैं कि जिस जागरूकता, उपस्थिति और सार की हम तलाश करते हैं, वह सब हमारे अपने ही अनुभव-क्षेत्र में मौजूद हैं। यह सार्वभौमिक ऊर्जा तब प्रकट होती है, जब हम अपने झूठे अहंकार को त्यागकर अपने जीवन में सच्चाई, ईमानदारी और सकारात्मक इरादों को अपनाते हैं। ऐसा करने से, हम उस गहरे संबंध से जुड़ते हैं, जो हमारे अस्तित्व को समृद्ध बनाते हैं।

पहलकदमी

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com